Dr. Bibhuti Bhushan, S.N.S.R.K.S.C, Saharsa, A.I.H.

Lecture -14

पुष्यमित्र शुंग की विजयें एवं उपलब्धियाँ

मौर्य साम्राज्य के विघटन के बाद भारत की राजनीतिक एकता छिन्न-भिन्न हो गई और मौर्यों के अवशेष पर अनेक छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ। इसी में एक शुंग राज्य था जिसने उत्तरी भारत में कुछ समय तक राजनीतिक एकता कायम करने में सफलता पायी। कहा जाता है कि अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ जब अपनी सेना का निरीक्षण कर रहा था, तब उसके सेनापति पुष्यमित्र ने उसकी हत्या कर डाली। मौर्य साम्राज्य के बाद केन्द्रीय सत्ता के अभाव में देश में जो विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति प्रबल हो चुकी थी। उसी का फायदा उठाकर पुष्यमित्र ने जिस क्रांति का नेतृत्व किया उसे ब्राह्मण-पुनः स्थापन काल नाम से भी जानते हैं।

शुंगों की उत्पत्ति एक विवादास्पद विषय है। दिव्यावदान नामक बौद्ध ग्रंथ में पुष्यमित्र शुंग को मौर्यवंशी कहा गया है। कुछ ने शुंगों को विदेशी साबित करने का प्रयास किया है। लेकिन अधिकतर स्रोतों से यही निष्कर्ष निकलता है कि शुंग ब्राह्मण जाति के थे। संभवतः पुष्यमित्र मौर्यों के राजपुरोहित का वंशज था। दुर्बल मौर्य शासकों के शासन से जनता को त्राण दिलाने तथा विदेशी आक्रमणकारियों से सुरक्षा के उद्देश्य से पुष्यमित्र ने जर्जर मौर्य साम्राज्य का अंत कर दिया एवं स्वयं एक नए राजवंश का प्रारंभ कर स्वयं राजा बना।

पुष्यमित्र शुंग एक योग्य सेनापति एवं कुशल प्रशासक था। अयोध्या अभिलेख, पुराणों, मालविकाग्निमित्र और हर्षचरित में उसके लिए 'सेनापति' शब्द का प्रयोग हुआ है। यद्यपि वह शुंगवंश का संस्थापक था, फिर भी वह सेनापति नाम से ही प्रख्यात था। उसने यद्यपि मौर्यों से सत्ता छीन ली थी परंतु अभी भी उसकी स्थिति सुदृढ़ नहीं थी। मगध का विशाल साम्राज्य बिखरकर टुकड़े-टुकड़े हो रहा था। विभिन्न शक्तियाँ विद्रोह का झंडा खड़ा कर रही थी। पुष्यमित्र शुंग की सबसे बड़ी सफलता थी बिखरते प्रदेशों पर पकड़ मजबूत करने की जारी।

Scanned with CamScanner

अत: पाटलिपुत्र पर अधिकार जमाने के बाद उसने राज्य को संगठित करना आरंभ किया। उसने कोशल, वत्स, अवन्ति सहित विदिशा को अपनी दूसरी राजधानी बनाया और अग्निमित्र को अपने प्रतिनिधि के रूप में पदस्थापित किया।

पुष्यमित्र के शासन की सबसे बड़ी घटना है विदर्भ के साथ युद्ध। मालविकाग्निमित्रम से पुष्यमित्र के साथ विदर्भ के युद्ध का पता चलता है। विदर्भ का शासक यज्ञसेन जो संभवत: बृहद्रथ का संबंधी था, विदर्भ का स्वतंत्र शासक बन बैठा। वह शुंगों का शत्रु था, पर उसका चचेरा भाई माधवसेन अग्निमित्र का मित्र था। जब माधवसेन अग्निमित्र से मिलने जा रहा था तब उसे बंदी बना लिया गया जिसके कारण शुंगों से युद्ध आरंभ हो गया। युद्ध में यज्ञसेन पराजित हुआ। विदर्भ को दोनों भाईयों ने आपस में बाँट लिया और दोनों ने ही शुंगों की अधीनता स्वीकार कर ली।

पुष्यमित्र के शासन की दूसरी प्रमुख घटना थी यवनों के साथ युद्ध। यूनानियों ने भारत के उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्र पर अपना प्रभाव जमा रखा था। पुष्यमित्र राजा बनने से पहले भी उसे एकबार पराजित कर चुका था लेकिन वे हार मानने वाले नहीं थे। पतंजलि के महाभाष्य और कालिदास के मालविकाग्निमित्रम से यवनों के दो आक्रमण का पता चलता है। पतंजलि ने लिखा है - "अरुणद् यवन: साकेतम् अरुणद् यवन: माध्यमिकाम्" अर्थात यवनों ने अयोध्या पर आक्रमण किया और माध्यमिका (चित्तौड़) पर भी आक्रमण किया। गार्गी संहिता के अनुसार यवनों ने साकेत, पांचाल और मथुरा पर आक्रमण किया तथा कुसुमध्वज (पाटलिपुत्र) पर भी। मालविकाग्निमित्रम के अनुसार अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा घूमते घूमते सिंधु के दक्षिणी तट तक पहुँच गया। वहाँ घोड़ा को यवनों ने पकड़ लिया और परिणामस्वरूप भी युद्ध हुआ। इसमें पुष्यमित्र के पौत्र वसुमित्र ने यवनों को पराजित कर घोड़ा छुड़ाया।

Continue/जारी रखें